श्री रामकथा मानस महाकाल का षष्ठम दिवस

28 अप्रैल, उज्जैन । जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में आहूत श्री राम कथा "मानस महाकाल" के अवसर पर व्यासपीठ से पूज्य मोरारी बापू ने कहा शुद्ध की महिमा है, सिद्ध की नहीं, आठ प्रकार की शुद्धि जिस में हो वही शुद्ध है। भौतिक ऋद्धियाँ और आत्मिक सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए हमें एकाग्रता का महत्व समझना चाहिए और उस पूजा काल की विशेषता नहीं समूचे जीवन क्रम को सारभूत एवं स्वर्णिम उपलब्धि मानकर परिपूर्ण श्रद्धा के साथ उसके उपार्जन में संलग्न रहना चाहिए। सद्गुरु के शब्दों पर भरोसा रख कर जागृक्ति में जीवन जीना ही भजन है। सद्गुरु कमजोर हो सकता है लेकिन गुरुपद कभी कमजोर नहीं हो सकता।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने भगवान् राम को काल का काल कहा है। तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता। भावार्थ:- हे तात! राम मनुष्यों के ही राजा नहीं हैं। वे समस्त लोकों के स्वामी और काल के भी काल हैं। वे (संपूर्ण ऐश्वर्य , यश, श्री, धर्म, वैराग्य एवं ज्ञान के भंडार) भगवान् हैं , वे निरामय (विकाररहित), अजन्मे, व्यापक, अजेय, अनादि और अनंत ब्रह्म है।

कथा कथाश्रवण करते समय आपका चित्त प्रसन्न और प्रशान्त होना चाहिये एक बात तो पक्की है व्यासपीठ केवल हिंदुस्तान में ही है। व्यासपीठ विश्व को भारत की देन ही है। परमात्मा का प्रेम भी उसी व्यक्ति को प्राप्त होता है। जो परमात्मा को प्रेम करता है। उन्होंने कहा कि साधु की भावना भी आस्था से जुड़ी होती है , धन-दौलत से नहीं। संतों का ह्रदय समान होता है और वह ज्ञान की ज्योत जलाकर समाज में प्रकाश देने के साथ धर्म-ध्यान के मार्ग पर चलने की सलाह देते है।

जीवन एक गुरुकुल है और आप को एक योग्य शिष्य होने के लिए संघर्ष कभी नहीं त्यागना चाहिए। मनुष्य जिस पल एक शिष्य होने के लिए संघर्ष त्याग देते हैं, तब वह एक निष्क्रिय व्यक्ति बन जाता हैं। इसलिए जीवन में सभी शिष्यों के लिए पहला लक्ष्य , एक अच्छा शिष्य बनना है। शब्द और संदेश जब तक कार्यरूप में न परिणत हो जाएं , कर्त्ता के लिए निरर्थक और निरूद्देश्य हैं। सार्थक वे तभी बनते हैं जब आचरण में उतरें और दूसरों को अनुकरणीय प्रेरणा दें।

जिसको गुरु के वचनो में भरोसा नहीं उससे सपने में भी कभी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। विश्वास की भी एक खुशबु होती है। बदबू तो अविश्वास की होती है। व्यासपीठ की विशालता और औदार्य है सब को स्वीकार करना है। राजपीठ संकीर्ण होती है। व्यासपीठ उदार है , बापू जी कहा मेरे लिए तो व्यास पीठ स्वास है। कृष्ण को देख कर प्रेम का दर्शन होता है। भगवान राम को देखकर सत्य का दर्शन होता है। भगवान शिव को देख कर करुणा का दर्शन होता है। जगत में आते हैं और कर्म कर चले जाते हैं। चलना ही नियति हैं - चरैवेति चरैवेति।

श्री रामकथा के शुभ अवसर पर निवृत्तमान शंकराचार्य पद्म भूषण स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी जी का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ, बाबूलाल जी गौर गृहमंत्री मध्यप्रदेश, श्रीमती कृष्णा गौर महापौर भोपाल, श्रीमती मालिनी गौड़ महापौर इंदौर एवं शिविर प्रमुख विनोद अग्रवाल जी ने पोथी पूजन किया, स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि जी, प्रभु प्रेमी संघ शिविर की अधिशासी प्रभारी पूज्या महामण्डलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गिरि जी, स्वामी नचिकेता गिरि जी, संरक्षक पुरुषोत्तम अग्रवाल जी उपस्थित रहे।

मीडिया सेल

प्रभु प्रेमी संघ कुंभ शिविर उज्जैन

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड, उज्जैन